यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना **जय महावीर** **जय गुरु राम**

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2022

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 8

अंक 97+3-100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

पेपर 97 अंक एवं 3 अंक सामायिक के हैं। जैसे :- 3 सामायिक करने पर 3 अंक दिए जाएगे और 2 करने पर 2 अंक इसी क्रम में सामायिक न करने पर 3 अंक काटे जाएंगे।

1. समता संस्कार पाठशाला के विद्यार्थी हों तो ¼✓½ सही या ¼✗½ गलत करें। ¼ ½

2. आपने कितनी सामायिक की है 1,2,3 काँलम में लिखें। ¼ ½

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो- **26**

1. पढ़मस्स णं भंते!.....
.....एवं वयासी।।

2. णवरं सुबाहु कुमारे .....
.....रण्णो।।

3. किं वा सामायरित्ता .....
.....अभिसमण्णागया?

4. तए णं तस्स.....
.....णिबद्धे।

5. सुबाहुकुमारे समणस्स.....
.....गुत्तबंभयारी।

6. सिरिदेवी पामोक्खाणं .....

.....विजय कुमारे

7. महापुरे णयरे .....

.....पुच्छा।

8. साइए णामं.....

.....सावगधम्मं।।

9.जो ज्ञानदर्शन .....

.....आकर बसे।।

10. निज आत्मा में .....।

जो तपी अपने .....।।

11. लाख-लाख .....।

.....दान दाता।।

12. देव वही .....

.....भरीश्रद्धान।

13. तप जीवन .....

.....जहान है।

प्रश्न 2 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए - **30**

1. सुबाहु कुमार के विवाह में क्या विशेषत थी?

.....

.....

2. ''सुरूप'' को समझाइये।

.....

.....

3. स्थविर का अर्थ स्पष्ट कीजिए

.....

.....

4. दाता को कब-कब हर्ष होता है?

.....

.....

5. ''पांच विस्वा हिंसा'' को समझाइए।

.....

.....

6. करणसत्तरी किसे कहते है? 66वां भेद बताइए।

.....

.....

7. निश्चय दया क्या है? उसे समझाइए।

.....

.....

8. ''प्रेढय त्याग'' प्रतिमा क्या है?

.....

.....

9. ''अपूर्वकरण गुणस्थान'' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

10. एक समय की स्थिति किस-किस गुणस्थान की है?

.....

.....

11. भद्रा रानी को पछतावा क्यों हुआ?

.....

.....

12. गजसुकुमाल मुनि ने अपना कार्य कैसे सिद्ध किया?,

.....

.....

13. मदनरेखा ने अंतसमय में पति को क्या बोध दिया?

.....

.....

14. नीतिकारों ने धन की क्या दशा बताई है?

.....

.....

15. चौतीस अतिशयों को विवरण बताइए।

.....

.....

प्रश्न 3 निचे लिखे पाठों का अर्थ लिखिए– **8**

1. तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खवयाइं दुवालस विहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जिता तमेव रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए।

.....

.....

.....

.....

2. तिक्खुत्तो आयाहिंण पयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ वंदिता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता सयहत्थेणं विउलं असणं पाणं, खाइमं, साईमं, पडिलाभिस्ससामि त्ति कट्टु तुटठे पडिलाभेमाणे वि वि तुट्ठे, पडिलाभिए वि तुट्ठे।

.....

.....

.....

.....

3. बलसिरि पामोक्खाणं पंचसयकण्णा पाणिग्गाहणं सामीसमोसरिए पुव्वभवपुच्छा। उसुयारे णयरे। उसभदत्ते गाहावई। पुप्कदंते अणगारे पडिलाभिए। माणुस्साउए णिबद्धे। इह उववण्णे जाव महाविदेह वासे सिज्झिहइ।

.....

.....

.....

.....

4. तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वस्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अज्झत्थिए समुप्पण्णे- धण्णा णं ते गामागर-णयर-जाव सण्णिवेसा जत्थणं समणे भगवं महावीरे विहरइ।

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 4 सही तथा गलत बताइए – **12**

1. सातवें गुणस्थान में माया प्रत्यया क्रिया ही होती है। ( )
2. आंशिक रूप से कर्मों का आत्मा से अलग होना मोक्ष है। ( )
3. पांचवे गुणस्थान में 7 आत्मा ही होती है। ( )
4. चौथे गुणस्थान में 6 लेश्या होती है। ( )
5. श्रेणिक राजा अपने स्वामी है तुम अनाथ हो। ( )
6. गजसुकुमाल मुनि ने अघाति कर्मों को क्षय करके केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त किया। ( )
7. राजा मणिरथ मरकर देवगति में गया। ( )
8. धर्मनीति है दूषित, कर्म बहुत बंधते। ( )
9. वह देव का भी देव मेरे, जीवन में आकर रहे। ( )
10. अतिवृष्टि अर्थात् बहुत अधिक वर्षा होती है। ( )
11. द्राक्षा का धोवन साधु को बहराकर तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया। ( )
12. दान में वस्तु नहीं बल्कि भावों का महत्व है। ( )

प्रश्न 5 अंको में उत्तर दीजिए – **12**

1. भगवान के चारों तरफ कितने योजन तक उपद्रव नहीं होता है? .....
2. निर्ग्रन्थ मुनि को कितने प्रकट के निर्दोष पदार्थ देने से महानिर्जरा होती है। .....
3. तीर्थंकर दीक्षा के पूर्व कितने वर्ष तक लगातार दान देते हैं? .....
4. नमिराजर्षि के उ त्तर कौन से अध्ययन में हैं। .....
5. शालिभद्र मुनि कितने सागरोपम की स्थिति में उत्पन्न हुए। .....
6. परमात्म बत्तीसी में कितनी गाथा है? .....
7. सुख विपाक के कितने अध्ययन प्रतिपादित हुए। .....
8. सुबाहुकुमार ने कितने दिन का अनशन किया। .....
9. भद्रनन्दी राजकुमार के कितनी राजकन्याओं के साथ विवाह हुआ। .....

10. शाश्वत गुणस्थान कितने होते है? .....

11.जब श्रावक 12 व्रत अंगीकार करता है तब उसकी अहिंसा कितने विस्वा होती है। .....

12. 9 मास की प्रव्रज्या वाला साधु कितने देवलोक के देवों के तेज का उल्लघंन कर जाता है .....

प्रश्न 6 बूझो तो जाने – **9**

1. बहुत है मेरी महिमा

देकर बन गया तीर्थंकर

नयसार ने बना दिया महावीर

यह है जैन धर्म का आधार

2. मैं ऐसा गुणस्थान हूँ

जिसमें एक चारित्र होता है

उपयोग होते हैं चार

होती है आठो कर्मों की निर्जरा

3. हम साधु सम है

युगमात्र भूमि देखकर चलते है,

घरों से भिक्षा लेते हैं।

फिर भी है श्रमणोपासक।